भक्त हृदय के उद्‌गार..

संत चरण की धूलि जो, सीस चढ़ाऊँ मैं।
धूलि में धूलि जा मिले, अमर हो जाऊँ मैं।।

संत बड़भागी मिले, जन्म जन्म गुण गाये।
गुण गाये मन राम का, और राममय हो जाये।।

सन्तन् की महिमा कौन करे, कोई ज्ञानी हो तो गाये।
ज्ञान पा अनुभव करे, तो ही सन्त दर्शाये।।

मैं अल्प बुद्धि हूँ मूढ़मति, क्या सन्तन् की मैं कहूँ।
इतना ही बहु भाग्य मेरा, सन्तन् का श्रवण करूँ।।

इस ज्ञान को ज्ञान अब तब मानूँ, जब सब अनुभव हो जाये।
राम धाम भीषण पथ, अनुसरण सम्भव हो जाये।।

तो ही जानूँगी सखी मेरी, मैंने सन्तन् के गुण गाये।
संत बसत् हैं राम चरण, मन उसी चरण में जाये।।

- परम पूज्य माँ

प्रार्थना शास्त्र - १/१८२
३०.१०.१९५९

अनुक्रमणिका

१. *भक्त हृदय के उद्‌गार..*

३. *पीछे मुड़ने की तमन्ना को तो आप श्री हरि माँ ने हवा दी ही नहीं..*
श्रीमती पम्मी महता

९. *साधक-साधना*
परम पूज्य माँ से 'पिता जी' के प्रश्नोत्तर

१६. *"सत्यता की जीवन में झलक"*
सुश्री छोटे माँ

२०. *..तनो भाव जो छोड़ दे, वह ही ब्राह्मण हो जाये!*
'मुण्डकोपनिषद्', प्रथम मुण्डक - २/१२

२६. *एक पत्र..*
(परम पूज्य माँ)
श्रीमती शान्ता देवी

३०. *राम नाम का मूल मन्त्र*
डॉ. जे के महता

३२. *देहात्म बुद्धि युक्त जीव भगवान की बातें क्या समझेगा?*
अर्पणा प्रकाशन 'श्रीमद्‌भगवद्‌गीता - भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन' में से
श्रीमद्‌भगवद्‌गीता २/२६-२८

३७. *अर्पणा समाचार पत्र*

❖ ❖ ❖

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविंद से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनी बद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*
सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल
१३२ ०३७, हरियाणा, भारत

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल १३२ ०३७ ०१, हरियाणा द्वारा मार्च २०२० को प्रकाशित तथा सोना प्रिन्टर प्राईवेट लिमिटेड, एफ -८६/१, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज़-I, नई दिल्ली ११० ०२० द्वारा मुद्रित

पीछे मुड़ने की तमन्ना को तो
आप श्री हरि माँ ने हवा दी ही नहीं..

श्रीमती पम्मी महता

अब कहाँ जाऊँ माँ प्रभु जी आपका दर छोड़कर,
कहाँ से उठा कर कहाँ तलक ले आये हैं इसे..

जी हाँ, आप ही तो आन्तर की भूल-भुलैयों से उठा कर.. इस अपनी कनीज़ को ले आये हैं, पीछे मुड़ने की तमन्ना को तो आप श्री हरि माँ ने हवा दी ही नहीं!

न जाने कब से.. कितने युगों से.. भटकती आ रही हूँ! इसीलिये न, कि सदैव पीछे मुड़-मुड़ कर देखती रही.. कोई न कोई चाहत हावी हो जाती मन पर और लौट

पड़ती। तभी तो हे मैय्या, आप उदासीनवत् मुझे देख कर ख़ामोश हो जाते! इस बार कृपा करी आपने स्वयं इसे बुला लिया, जो यह फिर लौटे नहीं..

मैं नहीं जानती कि 'मैं' क्या गुल खिलायेगी.. मगर आपका यह कृपा-प्रसाद मुझे आपकी करुण-कृपा में जिस क़दर ले आया है, शुक्र है! यहाँ 'मैं' की, मन की कहीं नहीं चलती.. क्योंकि मन तो आपने चुरा लिया! चुरा ही नहीं लिया, इस क़दर अपनी गिरफ़्त में ले लिया कि आपकी मुहब्बत से सराबोर हो गई। आपकी मेहर जो थी मुझ पर.. वरना मुझ जैसे जीव की फ़ितरत तो आप जानते ही हैं। फिर कैसे न मानूँ कि आप ही ने मेहर करी, इसे नवाज़ लिया!

जीवन में जीने की राह बन कर आप स्वयं हे हरि माँ आये हैं! बाबस्ता रहें इस हृदय में प्रभु जी.. जो आबाद रहूँ आप ही आप से! यही विनीत प्रार्थना-याचना लेकर आपके श्री चरणन् में आई हूँ। अब के पीछे न मुड़कर देखूँ और न ही 'मैं' में लौटूँ, यही अनुनय-विनय ले कर आई हूँ। 'मैं' रहित मैं करके ही इसे निज चरणी धरो!

'मैं' रही तो पुनः मैं को ही अपना लेगी
प्रभु जी तेरी माया के बुने जाल में हे माया-पति यह स्वयं को धर लेगी
घोर अंधकार के गर्त में पुनः लौट यह जायेगी..

आप श्री हरि माँ ही निज प्रीत में डुबो कर इसे लिवाने आये हो.. अपने समेत अपना सर्वस्व हृदय को अर्पित करके हे कृपालु दयालु नाथ इसे मुझी से उठाने आये हो। आप ही निज हृदय से लगा कर इसकी तड़प को सहलाने आये हो!

आप जानते हैं माँ
आपसे बिछुड़ने के बाद इस दिल पर क्या गुज़रती होगी
जिस आपके दिल को तड़पाती ही चली आई हूँ
इन कानों ने, इस हृदय ने, कब वह आह सुनी
जो आपके ख़ामोश हृदय ने चुप-चाप भरी होगी
फिर भी..
आप माँ की करुण-कृपा देख देख के हार गई
कैसे करुणामयी माँ आपने आ इसे हृदय से लगा लिया
बिन कहे क्षमा करी इसे निज अंग से लगा लिया!

पीछे क्या देखती.. आपके आकर्षण ने इसे जिस तरह आकर्षित किया; वह आपकी लाजवाब मेहर है।

आपका कृपा-प्रसाद पा धन्य धन्य होने लगी.. जब देखा आप मेरा कर पकड़ी चलने लगे मेरे लिये! आप से पाई दिव्य-दृष्टि के कारण ही यह भी नज़री आने लगा कि आप

पूज्य छोटे माँ, पम्मी चाची जी एवं अर्पणा के अन्य सदस्य

युगों-युगों से चलते चले आ रहे हैं मेरे लिये! आपका प्रेम सागर जैसे आपकी अँखियों में उमड़ आया। मैं इस क़दर मन्त्र-मुग्ध हुई.. उस सागर को, आपकी मुहब्बत को, उमड़ते देखती ही चली गई। बस फिर क्या पाया व आपसे पाने लगी.. आप ही की मुहब्बत के सभी रंगों ने मुझे इस क़दर रिझा लिया कि कहीं और देखने की चाहत न जाने आपकी मुहब्बत में जा कहाँ विलीन हो गई!

शुक्र करती हूँ उस पल का व शुक्रिया अदा करती हूँ आप श्री हरि माँ का, जिन्होंने मेरे जीवन को यह मक़सद दे दिया कि मैं अपने से निजात पा लूँ। ऐसो ही इस तुच्छ जीवन में आप जगतपति ने क़दम धरा..

आपकी मुहब्बत में धरा हर क़दम, इस ज़हन पे बहुत ही विचित्र, भव्य व सौम्य परन्तु जग वालों से बहुत ही अद्‌भुत व विलक्षण दीखने लगा। चाहते हुये भी इस आपकी प्रीत को कोई नाम नहीं दे पाई। इतने अलग है आप.. जिनके हृदय में सभी के लिए एक सा प्यार है। आप माँ मेरे ही सुर में सुर मिला कर, फिर निज सुर को अपने जीवन रस से घोल कर मेरे लिये सुर साधने लगे।

मैं आश्चर्यवत् देखती हुई मंत्र-मुग्ध सी आपके पाछे-पाछे चलने लगी। वहाँ मेरी कोई बात न थी.. आप माँ की ही हर अदा मुझे लुभाने लगी। मेरे 'मैं' के विस्तार को दर्शाते हुये, मेरे ही आन्तर में मुझे धकेल कर दर्शाने लगीं और साथ ही साथ आपकी मनोहारी छवि व आपके चलते हुये अनूठे क़दम किस क़दर parallel चल रहे थे.. जहाँ यह पता

चलता कि आप बहुत ही अलग हैं मुझसे! आप तो परम पूज्य व परम आदरणीय हैं! मुझ जैसे पत्थर हृदय को कैसे अपने प्यार की नमी से पिघलाते चले जा रहे हैं। आन्तर की माटी का खेल, 'खेल खेल में' आप किस तरह सुन्दर करने लगे.. आपकी इस अद्‌भुत लीला के भव्य दर्शनों का परम सौभाग्य पा, यह कनीज़ आपकी, आप ही से धन्य धन्य होने लगी!

कैसे जीवन में रफ़्ता-रफ़्ता आपके चले क़दम मुझ में बदलाव लाने लगे। आपके जलाये इस दिव्य प्रेमदीप में कैसे कैसे यह दीप्तिमान होती जाती व आप ही आप में उतरती चली गई। आपने इसे हर आँधी तूफ़ान से, जो जीवन में निरन्तर आते जाते हैं.. कैसे सुरक्षित कर लिया। आप बिन कहे कह देते इसे, 'आवाज़ देकर बुलाया है.. तो साथ भी पल-पल निभाऊँगी!'

आपने तो प्रथम मिलन से ही हे माँ, निभाना शुरु कर दिया। आपका आश्वासन भरा हाथ मुझे बिन कहे ही बहुत कुछ कहने लगा.. वाह री मुहब्बत, तू सच ही भगवान की मुहब्बत है; इसीलिये तो आप माँ प्रभु जी का दूसरा नाम मुहब्बत है। यह सत्य रूबरू होकर मेरे सामने खड़ा था और साफ़ दिखाई देने लगा कि साधक भाव में जीव को आप स्वयं ले आते हैं। अपनी ही आराधना के क़दम धरते हुये आप स्वयं ही साधक की साधना का उत्तरदायित्व उठा लेते हैं.. आपकी प्रीत का रंग निरन्तर चढ़ने लगता है! अपने और मेरे दरम्यां में कुछ और रह जाये.. यह तो आप मेरे लिये बरदाश्त ही नहीं करती थीं।

आपके सब्र को, आपके अथक क़दमों को निहारती ही चली जाती और मन कह उठता, 'वाह! ऐसी प्रीत तो आप स्वयं चखा रहे हैं मुझे..' इसके रसास्वादन करने के बाद बार-बार इसी अमृत रस में डूबे रहने को जी करता! सच है हे श्री हरि माँ, जिसका सोपान आप स्वयं कराते हैं उस का असर ही तन मन पर ऐसा होता जाता है कि नाम की अपरम्पार महिमा में जीवन ढलान पाने लगता है। इस आपकी अनन्त यात्रा का जब आग़ाज़ इतना सुन्दर है तो उसका अंजाम तो हैरतज़दा होगा ही.. बस जिज्ञासा दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही चली जाती है!

करुणामयी माँ, आप अपनी लाड़ली को हर आँधी तूफ़ान में अपने में सुरक्षित कर लेती हैं। जब परिस्थिति रूपा घटाटोप अँधेरे, आँधी तूफ़ान की तरह संतप्त करते हैं, आन्तर्मन में तभी आप अपने प्यार की वर्षा करके इस हृदय को सहला देती हैं और आगे चलने को प्रेरित करती जाती हैं। आप ही की मुहब्बत में गिरफ़्त होने की तमन्ना के दीप आन्तर में जल उठते हैं।

इसका यह अर्थ नहीं कि मुझे कहने योग्य कठोर शब्द नहीं कहतीं! मुझे तो इतना ही पता चलता.. आप जो भी कह रही हैं माँ, मेरे भले के लिये ही कहती हैं व वही करती हैं जो मुझे अगला क़दम मिल जाये.. इस तरह के आप से पाये अटूट विश्वास में पल भी

रही थी और मानसिक तौर पर स्वस्थ भी हो रही थी। हमारी रोगी मानसिकता ही है जो हमें बार बार गिराने की कोशिश में लगी रहती है। मगर कैसी नसीबन थी मैं, जहाँ आपने मुझे एक बार भी गिरने नहीं दिया। आपके हाथ मुझे गिरने से पहले ही थाम लेते! 'क्यों ऐसा करती हैं माँ..?' ज़हन पे यह प्रश्न उठता ज़रूर, मगर एक ही पल में उत्तर रूप में आप श्री हरि जगद्-जननी वेष में मंद मंद मुस्कान के साथ आ खड़ी होतीं.. बस यूँ ही आप मेरे प्रश्नों का उत्तर बनीं सामने खड़ी हो जातीं! तब ही जान पाती कि कैसे कैसे मुझे, मुझी से बचाने के लिये अपने पे वहन कर रही हैं!

यह सत्य तभी जान पाई जब तलक बाहर दोष देने बंद नहीं हुये। आप माँ और मेरे बीच मेरी 'मैं', कितने रूप धरे हुये थी.. आपने जब अपना ही इतना विलक्षण व मृदुल रूप मेरे आन्तर में बसा दिया, तो इस बस्ती में प्रेम की हरियाली, प्रेम की ख़ुशबू, प्रेम का आनन्द विस्तार पाने लगा! आपका असाधारण वात्सल्य मुझे अपनी प्यारी सी आग़ोश में समेटे रखता। संगमरमर की तरह सफेद, पावन व निश्छल प्रीत लिए आप मेरे सामने खड़ी मुझे अपनी अद्भुत लीला में अपने दिव्य दर्शनों से नवाज़ते हुये मुझपे करम पे करम करती चली जा रही थीं। आपकी मुहब्बत का बहाव बहुत ही गहन व पवित्र था।

दो शब्दों में इस प्रीत की व आपकी व्याख्या तो हो ही नहीं सकती.. यह तो आपके जीवन-दर्शन की वह वास्तविकता थी जो मेरे आन्तर्मन को क्रीड़ा-स्थली बना कर अपनी

लीला का रसास्वादन करा रही थी! मैं मन्त्र-मुग्ध हुई, तो कभी आत्मविभोर हुई, इन दर्शनों से धन्य धन्य हुई जाती.. यही मेरी जीवन की कहानी है।

आप ही ने तो कृपा करी.. इसके आन्तर के 'मैं', संग के आवरण उतार कर ही तो इसे निर्वस्त्र करना था.. मुझे मेरे शुद्ध रूप में लाना था! जान सकूँ कि मैं आत्मा हूँ; तनो, मनो बुद्धि वस्त्र नहीं हूँ। मैंने ही आत्मा को अपनी अज्ञानता रूपी वस्त्रों से ढाँपा हुआ है, अपने घूँघट पहर रखे हैं।

कहाँ जानती थी यह सभी.. जैसे जैसे आप इसे कृपा करी जनवाने लगीं हे श्री हरि माँ, तभी तभी वहाँ वहाँ आपकी करुण-कृपा से जागृत होती चली गई। आवरण जो हृदय-पटल पर पड़े हुये थे.. आप एक एक करके उतारती चली गईं! आप माँ ने तो जीवन अपने की बाज़ी लगाई हुई थी मेरे लिये.. इसीलिये यह कृतज्ञता से भरा मन ख़ामोश आँसुओं से भरा रहता! चुप-चाप आपके चरणों पे झुक कर आपके चरण धो लेती। रात की ख़ामोशी में हृदय रुख़सार से ढल जाता..

साधना के बीज पनपाने के लिये आप इस आन्तर को बुहार ही तो रही थीं, साथ साथ अपने नाम की महिमा से इसका रोम रोम भरती जातीं। जैसे दूर क्षितिज में जहाँ धरा और आकाश का मिलन होता है वहाँ तलक चलती ही चली जा रही थीं आप मेरे लिये! महरूम न रह जाऊँ आपके किसी भी पहलू से.. आप मुझे अपने में महफ़ूज़ रख कर लिये ही जा रही थी।

अपनी ही प्रकट लीला में अपने भव्य व दिव्य दर्शन देने को.. जो भी आप देतीं, वह अलौकिक प्रसाद था आपका! मुझे इस हृदय में उठाये राम भाव को आप पुष्टित व पल्लवित करती ही चली जातीं.. आपके तेज पुंज से भरा आपका यह जीवन मुझे आपकी दीवानगी में किस हद तक ले गया, मुझे स्वयं भी पता नहीं चला। इसके लिये हे श्री हरि माँ, आपका कोटि कोटि धन्यवाद करते हुये आप ही की चरण वन्दना करती हूँ।

जिन्होंने मुझे आँच तक नहीं लगने दी जीवन के थपेड़ों से.. जैसे फूलों को काँटों से निकाल ले जाता है कोई। यही मेरे जीवन की वह यथार्थता है जो स्वांतःसुखाय तो है ही व आपकी अहेतुकी कृपा का बहुत ही अनूठा प्रसाद भी है।

ऐसी प्रीत कहाँ मिलती है व कहाँ मिलेगी यह देखी देखी हृदय छलक आता है। ऐसा अपने प्रति उदासीन व वैरागी मन कहाँ मिलेगा जहाँ कण-मात्र भी अपनी याद नहीं। निःसंगता का यह प्रसाद बहुत ही अद्‌भुत है। आप श्री हरि प्रभु का अवतरित होना सगुणवेष में.. परम वन्दनीय परम पूज्य श्री हरि माँ वेष में.. ऐसे भगवान व आपके चरण कहाँ मिलेंगे, इस धरा पर कहीं और!!

हे सरस्वती माँ आप ही का धन्यवाद करती हूँ जो यह कृपा-प्रसाद आप ही के कारण मुझे भी मिला। कोटि कोटि धन्यवाद श्री हरि माँ प्रभु जी का व आपका भी!

हरि ॐ ❖

साधक-साधना

परम पूज्य माँ अपने पिता जी श्री सी एल आनन्द के साथ

पिता जी

साधना किसे कहते हैं? सच्चा साधक कौन है? यह सुना है कि साधना का पथ बहुत कठिन है.. यह तलवार की धार की तरह कहा जाता है!

माँ, यह बात समझ में नहीं आई.. इस पर कुछ रोशनी डालिये।

प्रश्न अर्पण

साधक साधना किसे कहें, क्षुरस्य धारा काहे कहें।
स्पष्ट इसे अब तुम कहो, शास्त्र ऐसा क्यों कहें।।१।।

किस स्तर पर हो साधना, किस स्तर पर पुकारें तुझे।
सुघड़ साधक इस जग में, किस रूप में निहारे तुझे।।२।।

तत्व ज्ञान

कार्य सिद्धि साधन पथ, जिज्ञासु करे है साधना।
पथ विघ्न वशीभूत कर, परिणामित फल है साधना।।३।।

राह विघ्न विध्वंस कर, विजेता रूप है साधना।
नियुक्त लक्ष्य सिद्धि अर्थ, साधक करे है साधना।।४।।

कार्य सिद्धि जो चाहो, उस लक्ष्य को है साधना।
राहों में जो भी आये, प्रथम उसे है साधना।।५।।

विघ्न वश में कर लेना, शुद्ध अशुद्ध को कर देना।
मल शोधनकर अभ्यास करी, प्रकट लक्ष्य को कर लेना।।६।।

अब जिज्ञासु को जानो, राम है उसने साधना।
राह विघ्न मन बुद्धि अहं, को साधक ने है साधना।।७।।

सत् ही लक्ष्य जिसका हो, उस को साधक तुम कह लो।
राम को उसने पाना है, हर कर्म साधना तुम कह लो।।८।।

ज्ञान-विज्ञान सहित

साधना मन की मन में हो, मन मन को निहारे है।
भावना अपनी सामने धरी, भावना को पुकारे है।।९।।

जो भावना में सत् माने, उस सत् पे जब न चल पाये।
मन देखी विघ्न राहों में, मन ही मन वह घबराये।।१०।।

प्रथम जाने है सत्य क्या, फिर जाने मैं यह हुआ नहीं।
ज्ञान समझा है राम क्या, पर जाना मैं वह हुआ नहीं।।११।।

सुना शास्त्र की राही जब, जो तू है वह ही मैं हूँ।
पर राम मेरे सत् भाव में, 'सोऽहमस्मि' न कह सकूँ।।१२।।

मन में जिस पल जा देखे, वहाँ भीषण रूप ही पाता है।
अवगुण निज मन के दीखें, इस कारण वह घबराता है।।१३।।

कोई वीर ही हो कोई धैर्यवान, जो आपुनो मुखड़ा देख ले।
भीषण रूप निज मन का, निज बुद्धि राही देख ले।।१४।।

मोह की बतियाँ आपुनो, मोह भरे कर्म जो देख ले।
कामना अपनी निहित छुपी, सामने धर कर देख ले।।१५।।

दूजे पे जो दोष धरे, वह आपुनो हैं जो देख ले।
विकराल रूप वह आपुनो, अपने आप में देख ले।।१६।।

कैसे देखे गर देख करी, दारुण दुखी हो जाये है।
आपुनो मुखड़ा निर्बल साधक, कबहुँ देख नहीं पाये है।।१७।।

स्थूल में जा के शास्त्र पढ़ी, जी अपना बहलाता है।
जो जो वहाँ पे भला लगे, कण्ठस्थ करी वह गाता है।।१८।।

जो गाये वह आप है, यह वह माने जाता है।
आपुनो रूप विपरीत है, यह वह समझ नहीं पाता है।।१९।।

उसे तुला बना कर जग में जा, जग को तोले जाता है।
भला बुरा इस जग को, वह बार बार बताता है।।२०।।

भेद दर्शी बुद्धि यह, गुण अवगुण दर्शी है यह।
शास्त्र पढ़ी कुछ और बढ़ी, जग तोलन चली है यह।।२१।।

पर शास्त्र तुला बनाये करी, दर्पण में निज मुख न देखे।
शास्त्र दर्पण बन जाये, गर अपना मुखड़ा वह देखे।।२२।।

गर देखे तड़प वह जायेगा, निज मुखड़ा उसे न भायेगा।
आन्तर बैठी घूँघट पहर के, तड़पी वह राम बुलायेगा।।२३।।

त्राहि त्राहि पुकारे जब, निज मुखड़ा देखी पुकारे है।
बचाओ राम मोरे मन से मुझे, यह ही तो वह पुकारे है।।२४।।

जग से बचा वह नहीं कहे, सबसे बचा वह नहीं कहे।
धन मिले या मान मिले, ऐसी बात वह नहीं कहे।।२५।।

वह अपने से घबराया है, उस आपुनो दर्शन पाया है।
निज मुखड़े से खुद तड़पा, इस कारण उसे छुपाया है।।२६।।

दूजे को कहो भला बुरा, यह तो सहज ही हो जाये।
अपने को कहो भला बुरा, यह नहीं कभी हो पाये।।२७।।

प्रेम की बातें करता है, अपने मन को न देखे।
माँगे है पर दे नहीं, ऐसी बात मन न देखे।।२८।।

देखी श्रेष्ठ वहाँ द्वेष करे, अपना द्वेष वह न देखे।
किस कारण मुझे द्वेष हुआ, इसको वह है कब देखे।।२९।।

जिससे द्वेष तेरा मन करे, दोष भी उसे लगाये है।
द्वेषी मन जो आपुनो, साधक देख न पाये है।।३०।।

जब मन देखे तब जान लो, आरम्भ साधना होये है।
अरि मन उस पल जानो, मित्र तुम्हारा होये है।।३१।।

जब मन तोरा मित्र बने, साधना आरम्भ हो जायेगी।
क्षुरस्य धारा पे जब चले, तब ही हो वह पायेगी।।३२।।

आपुनो मुखड़ा निहारना, बहुत कठिन यह होये है।
दूजे को दुत्कारना, यह तो सहज ही होये है।।३३।।

दोष लगाये दूजे पे, इससे कुछ नहीं पायेगा।
अपने पे जो दोष धरे, साधक वह हो जायेगा।।३४।।

जब वह साधना आप करे, निज मन को स्वयं देख ले।।१०।।
काम क्रोध मद लोभ मोह से, साधक आप ही भिड़ जाये।।३५।।

आपुनो लोभ से वह भिड़े, आपुनो चाह से भिड़ जाये।
आपुनो मोह से आप भिड़े, आपुनो आप से भिड़ जाये।।३६।।

तब मन से भिड़े मन से कहे, यह चाहना तुम छोड़ दो।
मन से कहे मन मेरे, तुम क्रोध से नाता तोड़ दो।।३७।।

मोह भरी तेरी भावना, तुझे संग वहीं जो हो गया।
मन से पूछ तू मन मेरे, क्यों झूठी बात में खो गया।।३८।।

जब बैठी कोई निर्णय दे, द्वौ में निर्णय होता है।
जो है कोण है आपुनो, दूजो कहाँ वहाँ होता है।।३९।।

वहाँ बैठ के जब देखे, द्वौ कोण देख जब न सके।
किस बुद्धि आसन पे चढ़ी, निज निर्णय को सत्य कहे।।४०।।

ऐसा हो नहीं पायेगा, जब लौ मोह नहीं जायेगा।
साधक है वह साधु है, जो मोह को देखे जायेगा।।४१।।

इसी विधि बहु चाहना भरा, यह मन साधक होये है।
दूजे को कुछ नहीं कहे, वह अपने मन में खोये है।।४२।।

अशुद्ध चित्त जिसे कहते हैं, अशुद्धता दर्शन करता है।
साधक आपुनो दर्शन से, कबहुँ नहीं फिर डरता है।।४३।।

हो धैर्यवान हो धृतिवान, पूर्ण ज्ञान तब ही पाये।
मन में आसन जब लगे, तब ही तो यह हो पाये।।४४।।

स्थूल आसन लगा करी, कुछ नहीं वह पाये है।
आन्तर जब आसन लगे, साधना आरम्भ हो जाये है।।४५।।

आन्तर्मुखता की सुनो, सत् वाक् पठन वह नहीं नहीं।
शास्त्र मनन वा चिन्तन भी, जानो आन्तर्मुखता नहीं।।४६।।

आन्तर मन में बैठ करी, जो निहित मन को देखे है।।
निहित पुकार जो छिपी हुई, उस ओर जो साधक देखे है।।४७।।

स्थूल में शास्त्र जो पढ़े, उनकी राही वह आया है।
अब आन्तर में जो छुपा हुआ, उस को देख वह पाया है।।४८।।

जब आन्तर में वह देखेगा, आन्तर्मुखी हो जायेगा।
निहित भावना आपुनो, ही वह देखे जायेगा।।४९।।

जब आपुनो दर्शन आप करे, साधक वह हो जायेगा।
भावना को वह तब ही कहो, साधक समझ ही जायेगा।।५०।।

शुद्ध भावना शुभ्र भाव, सामने ही वह धर लेगा।
मूर्तिमान वह सद्भावना, अपने में ही कर लेगा।।५१।।

सत्य वह राम को कहता है, प्रेम राम को कह देगा।
शुद्ध अशुद्ध जो भी है, पूर्ण राम को कह देगा।।५२।।

साक्षी उसे बनाये करी, आपुनो मन निहारेगा।
आपुनो आप को देख करी, सद्भावना को पुकारेगा।।५३।।

कहे लग्न तुझी में हो जाये, तब चित्त मोरा बदलेगा।
श्रद्धा हो विश्वास जो हो, तब ही तो यह बदलेगा।।५४।।

ऐसी भावना जब उठे, मन राम राम बस राम कहे।
आपुनो मुखड़ा देख करी, राम राम हे राम कहे।।५५।।

विकराल रूप अपना देखे, पुकार सत्य हो जायेगी।
बिन अपना मुखड़ा देखे, वह सत्य नहीं हो पायेगी।।५६।।

कहो राम बस राम राम, यह शब्द नाम रह जायेगा।
जब भाव भरी के देखो उसे, मंत्र वही बन जायेगा।।५७।।

जब कहो कि पुकारूँ तुझे, तब आन्तर जा के देखोगे।
अपने मन को देख करी, तब ही राम को देखोगे।।५८।।

अपने आप से घबराया, चरणन् में जब आयेगा।
त्राहि त्राहि पुकार कर, राम शरण में जायेगा।।५९।।

गर अपना आप ही देखा न, तो जग को दोष लगायेगा।
वृत्ति रूप है जग सारा, यह समझ नहीं पायेगा।।६०।।

आरोपित जो मन दोष करे, वे आन्तर में ही होते हैं।
बुरा जो दूजे को कहे, दुर्भाव आपुनो होते हैं।।६१।।

जो आन्तर आ के देख ले, अपना मुखड़ा देखेगा।
कभी ज्ञान राही वह देखे, कभी प्रेम की राही देखेगा।।६२।।

शनैः शनैः वह साधक तब, उदासीन होई के देखेगा।
यह मन जो है ऐसा ही है, आप ही आप में देखेगा।।६३।।

देख करी वह बार बार, राम राम ही पुकारेगा।
राम पुकार के अपने आप, को ही तो वह निहारेगा।।६४।।

मनोमान्यता ज्ञान जो है, जो जो सत्य वह माने है।
अपना आप वह हुआ नहीं, जिस पल यह वह जाने है।।६५।।

फिर सद्भावना लाये करी, इक मूर्त राम की वह घड़े।
मोपे गुण यह नहीं नहीं, देख करी उस पे मढ़े।।६६।।

सामने उनको धर करी, वह राम राम पुकारे है।
अपने में वह गुण नहीं, राम में उन्हें निहारे है।।६७।।

वा को निहार के साधक वह, कहे राम मेरे राम राम।
आकर राम बताओ मुझे, किस विध लूँ मैं तोरा नाम।।६८।।

जब प्रेम वहाँ पर बढ़ जाये, तब वृत्ति नाश हो जायेगा।
वह साधक दुर्भावना को, फिर शनैः शनैः मिटायेगा।।६९।।

बहु जटिल बहु कठिन यह, यह तो हो नहीं पाता है।
जो मैं मानूँ मैं रे हूँ, मैं मान नहीं पाता है।।७०।।

सो अपने मन से आप कहो, मन तुम निज को देख लो।
जो जो आप को माने हो, वह तुम अब लौ कहाँ पे हो।।७१।।

ज्ञान जो जाना माने हो, पर जानो वह तुम नहीं हुए।
सत्य जान कर सत्य से, भी तो मन तुम दूर हुए।।७२।।

साधना आरम्भ हो जायेगी, राम कृपा हो जायेगी।
सत्य से प्रीत हे साधक सुन, उस पल तव बढ़ जायेगी।।७३।।

साधक भाव

राम सुनो मन देखा नहीं, और देख भी नहीं पाता हूँ।
इस कारण हे राम मेरे, मैं सीस झुका नहीं पाता हूँ।।७४।।

कोई मुझ से श्रेष्ठ भी है, यह भी मान नहीं पाता हूँ।
कुछ मुझको भी पाना है, यह भी जान नहीं पाता हूँ।।७५।।

चरण पड़ी तोरी बिनती करूँ, सत्य जान नहीं पाया हूँ।
पर नाम की महिमा सुनी, अब तेरे दर पे आया हूँ।।७६।।

जीवन साधना अब भये, बस इतनी बात मैं जान लूँ।
बुरा लगे या भला लगे, आपुनो मन पहचान लूँ।।७७।।

गर तोरी कृपा हो राम मेरे, सत्य सामने आ जाये।
जो जो सत्य मैं माने हूँ, वह मूर्तिमान तब हो जाये।।७८।।

उसे देख के राम मेरी, प्रीति वहीं पे हो जाये।
तब जानूँ गर प्रीत बढ़े, जीत सत्त्व की हो जाये।।७९।।

ऐसी आँख जो लड़ ही गई, मदहोश हो जाऊँगा।
देख राम तब ही जानूँ, मैं तुम में ही खो जाऊँगा।।८०।।

गर आँख लड़ी और प्रीत बढ़ी, नयनन् रस मैं पीऊँगा।
तोरे चरण में सुन हे राम, बाकी जीवन जीऊँगा।।८१।।

सो राम कहूँ गर दर्शन दो, तब ही तो यह हो पाये।
देख राम गर कृपा करो, मन तुम्हीं में खो पाये।।८२।।

कहो लग्न होये तब ही यह हो, कृपा करो वह लग्न हो।
अपने मन को जान लूँ, आज हृदय मग्न ही हो।।८३।।

आज कहूँ जो माने हूँ, वही राम मैं हो जाऊँ।
जो माने हूँ कर्मन् में, जीवन वैसा कर पाऊँ।।८४।।

कैसे करूँ न जानूँ राम, कृपा का याचक आया हूँ।
राम राम तोरे नाम की, महिमा सुन कर आया हूँ।।८५।।

सत्य की करुणा नित्य रहे, मैं करुणा को ही पुकारे हूँ।
करुणापूर्ण तू ही है, मैं तुझको ही निहारे हूँ।।८६।।

सत्संग शास्त्र
५.११.१९६५

"सत्यता की जीवन में झलक"

सुश्री छोटे माँ द्वारा प्रस्तुत यह लेख परम पूज्य माँ के सत्संग पर आधारित है,
इसे 'अर्पणा पुष्पांजलि' के मई १९८४ अंक में से लिया गया है.

मन्दिर में परम पूज्य माँ, पूज्य छोटे माँ एवं अन्य सदस्य

भगवान जब धरती पर अवतरित होते हैं तो वह परम गुण सम्पन्न साधारण जीव की भाँति धरती पर आते हैं.. तनधारी दर्शाते हुए भी वह निज तन, मन, बुद्धि तथा जग के गुणों से प्रभावित अथवा लिप्त न होते हुए, भगवान समान जीवन में धर्मानुकूल व्यवहार विधि का प्रमाण सहित निरुपण करते हैं और वह जीवन राही धरती पर बह जाता है।

इसीलिये कहते हैं, ऐसे महापुरुष ज्ञान को चरणों राही धरती पर लिखते हैं.. उनका सारा ज्ञान कर्मों में परिणत हो जाता है। बाद में ज्ञानी संतजन उनके जीवन को लेखनीबद्ध कर देते हैं।

इस दृष्टिकोण से देखें तो भगवान जब धरती पर साधारण जीव की भाँति आते हैं तो वह केवल शुद्ध प्रेम हैं, केवल त्याग हैं, शुद्ध वैराग्य एवं केवल संन्यास हैं.. हमें इसी रूप में उनके दर्शन करने चाहियें। हम उन भगवान राजा राम को इस दृष्टिकोण से देखें तो याद आयेगा कि वह मुकुट पहन कर राजपाट के आभूषण पहनकर, चमकते चेहरे से मुसकुराते हुए, घूमते हुए, पूर्ण जनता को आसीस देते हुए बाहर निकलते होंगे।

उनकी आंतरिक पीड़ा को कौन समझा होगा.. उनका दर्द किसने पहचाना होगा.. अद्‌भुत बात तो यह है कि उनके चेहरे से तो किसी को भी पता नहीं लगता होगा कि राम

को भी कहीं कोई दुःख है! क्या वह पाषण हृदय थे? ऐसी बात तो नहीं थी! क्या उनका इतना ही दोष कहें कि उन्होंने अपने दुःख को दर्शाया ही नहीं.. क्या इसी कारण हम उन्हें भूल गये?

इसको समझने के लिये याद आता है..

पूज्य माँ अपनी बचपन की एक घटना बतलाया करते हैं कि एक बार उन्होंने अपने दिल की बात अपनी किसी सखी को बतलायी। बतलाने के बाद ही मानो वह द्रष्टा बन कर अपने ही मन को देखने लगे कि वह मन जो चुप बैठा था, अब बोलने लगा। मन में इस प्रकार भाव उठने लगे..

- मैंने तो अपने दिल की बात बतलायी थी, परन्तु दूसरे ने तो मेरी बात ही नहीं पूछी।
- दूसरे ने तो ध्यान ही नहीं दिया। यह याद करके आप ही दुःखी होने लगा।
- मन में इस प्रकार की आशा रखकर अपने पर ही खीझ आने लगी।

अपने मन के दर्शन माँ ने कुछ इस प्रकार से किये..

- अपने दिल की बात बतलाने से दूसरे के प्रति अधिकार का भाव जाग जाता है।
- दूसरे इन्सान से फल की इच्छा उत्पन्न हो जाती है।
- अपना मन बोलने लगता है।

मन को कहने लगे, 'हे मन! यदि तू यह आशा रखेगा कि दूसरा इन्सान तेरे मन की बात को वैसे ही समझेगा, जैसे तूने कहा, तो यह आस रखना तेरी भूल है.. क्योंकि दूजा भी तो मन वाला है। उसका अपना मन, उसकी अपनी परिस्थियाँ और अपना भिन्न वातावरण है। उसकी समझ भी अपनी समझ है.. तो यह कैसे हो सकता है कि वह तेरी बात को उसी प्रकार ही समझे जैसे तूने कहा है? यदि उसने किसी और ढंग से समझा तो तब भी तुम अतृप्त रहोगे..'

तुम समझते हो कि तुम्हारी बात को दूसरा तुम्हारी तरह ही समझे, तो यह असम्भव है क्योंकि उसका मन तो अपने ढंग से ही समझेगा.. दूसरा मौन तो है नहीं.. इसके परिणामस्वरूप मन ने इस बात को जान कर मान लिया और जीवन में मुदित मनी हो रहने लगा।

माँ ने कई बार बतलाया कि यह इस प्रकार की एक ही घटना थी जिसके परिणामस्वरूप मन में इस भाव की जागृति हो गई। तत्पश्चात् मन को कभी दिल की बात बतलाने की आवश्यकता ही नहीं हुई। उस परिस्थिति के पश्चात् ऐसा स्वभाव बना कि उन्होंने दूसरे के दिल की बात सुननी आरम्भ कर दी और अपने दिल की बात बतलाने का स्वभाव ही नहीं रहा। ऐसे कह सकते हैं, 'ज़माना गुज़रा है अपना ख़्याल आये हुए..'

यहाँ पर ऐसा प्रतीत होता है कि पावनता की प्रतिमा महापुरुषों का यही ढंग होता है.. जिसका दर्शन हमें राम जी के जीवन राही हो रहा है। अब इस दृष्टिकोण के साथ जब दर्शन करते हैं तो पता चलता है कि -

- उनकी एक एक मुस्कान में कितना दर्द होगा।
- उनकी एक एक बात के पीछे कितने आँसू हैं।

हमने राम को इस रूप में कभी नहीं देखा। यह सत्य है इस रूप में हम अपने राम से कभी मिले ही नहीं। हमने राम जी के दर्शन अपने मन के द्वारा किये हैं और बाल्मीकि जी की लेखनी से किये हैं। हमने जीवन की यह रूपरेखा तो बाल्मीकि जी के द्वारा देख ली थी परन्तु उसमें जीवन को भर कर नहीं देखा। आइये, अब भी जाग कर इस प्रकार से देखें!

पूज्य माँ के घनिष्ठ सम्पर्क और अहर्निश उपासना का यही प्रसाद मिला कि अब कुछ-कुछ हम जागने लगे हैं और पता चल रहा है कि सच ही ज्ञान पाकर और गुमान करके हम अपने आपको नहीं बदल सकते। बल्कि जीवन में उसे भर कर देखें तो ही समझ सकते हैं।

अब जब माँ जीवन के विषय में कुछ बतलाते हैं तो उस राज़ की झलक मात्र समझ आती है। आइये, अब इसी दृष्टिकोण से सच्चाई को देखें तो शायद पता चले कि दोबारा बनवास मिलने पर सीता जी फटे-चिथड़े कपड़े पहन कर किसी कोने में छिप-छिप कर आँसू बहा रही होंगी।

राम जी को यह भाव तो उठता होगा कि मैं उनके (सीता जी के) आँसू भी नहीं पोंछ सकता। वह अखिल पति! जो सारे संसार के आँसू पोंछते हैं उन्हीं की अपनी पत्नी के पास कोई भी आँसू पोंछने वाला नहीं है।

इस प्रकार सोचकर राम जी ने कितने ही आँसू बहाये होंगे। इस विषय में तो हमने सोचा ही नहीं। अब समझ आता है कि जब भी कभी माँ से मैंने पूछा, 'माँ! मेरी साधना आरम्भ हुई है या नहीं?' उन्होंने एक ही उतर दिया, 'अभी तो मैं तुम्हें केवलमात्र व्यावहारिक स्तर पर जीना बतला रही हूँ।' यह बात समझ नहीं आती थी। परन्तु अब शनैः शनैः यह राज़ खुल रहा है कि जीवन में जी कर ही तो अनुभव होगा।

अब इसका अर्थ समझ आता है कि सच ही हमने तो उनको देखा ही नहीं.. जाना ही नहीं.. माना ही नहीं.. वरना हमारे आँसुओं का थम जाना भी कठिन हो जाता। हम लोग भी वैसे हैं जैसे अन्य लोग थे। हम भी कपटी, ढोंगी और गुमानी तथा बेरहम हैं। इसी कारण यदि राम आ जायें तो क्या होगा? हमारे आसन डोल जायेंगे।

- हम जो धर्म के ठेकेदार बन गये हैं, उनके आँसू हमें नजर क्या आ सकते हैं?
- हम अपने को ज्ञानवान समझने लग गये हैं। हम प्रेम की भाषा क्या समझें..

आज तो यही भाव रह गया है कि हमें तो गणना करनी है कि हमारे शिष्य कितने

बने हैं। वास्तविक तुला तो यहाँ से बनेगी कि कितनों को बढ़ा सकते हैं या कितनों की नौकरी कर सकते हैं। जितनों की नौकरी कर सकते हैं उतना ही ज्ञान हमारे पास है। यदि नाम में लग्न सच्ची हुई तो हम भगवान के गुण अपने में लाने का प्रयत्न करेंगे। नहीं तो हमें अपने जीवन को देख कर पता चलेगा कि मैंने कितना नाम लिया है!

यदि नाम अधरों तक ही रह जाये और जीवन को वह रंग भी न पाये तो उसका क्या लाभ? जब इस प्रकार से देखेंगे तो पता लगेगा कि क्यों ज्ञान निष्प्राण, निष्प्रयोजन रह जाता है.. और हम कहाँ भूल कर बैठते हैं! यह देखेंगे तो पता चलेगा कि हमें तो अब जीवन में जी कर प्राण भरने हैं।

ऐसे महापुरुष तो जन्म लेकर प्रमाणित कर देते हैं कि कैसे वह इस भाव में जीये। "जेहि विधि राखे राम, तेहि विधि रहिये।" उनकी अपनी कोई चाहना नहीं रहती। वह सबके हो कर जीते हैं। उन्हें जीवन में क्या मिला?

"जब जब राम ने जन्म लिया तब तब पाया बनवास.."

उन्हें बनवास देने वाले, न पहचानने वाले, हम ही तो हैं। जब अपना ऐसा रूप देखते हैं तो वह जो भगवान को पुकारने का भाव होता है, वह अपने दर्शन करके घबरा जाता है.. हे राम! तू मत आना। क्योंकि ग़लती से कहीं तू आ गया तो मैं तुझे फिर ठुकरा दूँगी, तड़पा दूँगी। मैं वही करूँगी जो पहले हुआ था। मुझे चाकर चाहिये.. ठाकुर नहीं।

जब यह 'मैं' अपने दर्शन करके तड़प उठेगी तब समझ आयेगी और हम तड़प कर पुकार उठेंगे, हे राम! तू पहले मुझे धूलि बना दे.. इतनी मेरी बिनती है। बहुत जन्म पुकार चुकी। हर बार ठुकराया.. परन्तु अब अपने दर्शन करके तड़प उठी हूँ। इस प्रकार अपने दर्शन करते हुए शायद पाषाण हृदय पिघल जाये।❖

..तनो भाव जो छोड़ दे,
वह ही ब्राह्मण हो जाये!

परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान् ब्राह्मणो निर्वेदमायान्नास्त्यकृतः कृतेन।
तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत् समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठ।।

- मुण्डकोपनिषद्, प्रथम मुण्डक - द्वितीय खण्ड, १२ श्लोक

शब्दार्थः

कर्म से प्राप्त किये जाने वाले लोकों की परीक्षा करके ब्राह्मण वैराग्य को प्राप्त हो जाये; यह समझ ले कि किये जाने वाले कर्मों से स्वतः सिद्ध नित्य परमेश्वर नहीं मिल सकता; वह उस परब्रह्म का ज्ञान प्राप्त करने के लिये हाथ में समिधा लेकर वेद को भलीभाँति जानने वाले और परब्रह्म परमात्मा में स्थित गुरु के पास ही विनयपूर्वक जाये।

तत्व विस्तारः

महाकर्म अनुष्ठान करी, परम सत्त्व रे ना पाये।
अनेक यज्ञ याग करी, सत्त्व वंचित रह जाये।।१।।

कर्मन् सों जो पा जाये, उन लोकन् को निहार करी।
परीक्षा करी परिणाम की, सत्त्व तत्व निहार करी।।२।।

ब्राह्मण का यह कर्म त्यजी, वैराग्य को पाते हैं।
स्वतः सिद्ध परमेश्वर, कर्मन् सों नहीं पाते हैं।।३।।

परम की चाहना लिये हुए, वह गुरु चरण में जाते हैं।
विधिवत् समिधा कर लिये, विनय भाव सों जाते हैं।।४।।

वेदज्ञ पूर्ण हो करी, ब्रह्म में निष्ठा धरे हुए।
अन्य चाहना त्यज करी, राम हिय में धरे हुये।।५।।

विनय श्रद्धा आभूषण, प्रेम सों कर में लिये हुए।
परम ज्ञान ज्ञान स्वरूप, की चाहना वह लिये हुए।।६।।

श्रेय पथ अनुसरणी भये, परम मिलन को चल वह दिये।
परोक्ष ज्ञान वह पा करके, अनुभव पाने चल दिये।।७।।

शास्त्र कृपा थे पा चुके, गुरु कृपा को चल दिये।
स्थूल लोक वह छोड़ करी, आन्तर लोक को चल दिये।।८।।

फल लोक को त्यज करी, आनन्द लोक की चाह लिये।
विज्ञान लोक में जा पहुँचे, सत्त्व लोक की राह लिये।।९।।

क्रिया साध्य यह परम नहीं, कृपा साध्य उसे जान गये।
शास्त्र कथन यह वह साधन, अनुभव सों रे जान गये।।१०।।

परम कृपा सों बहु परे, कर्मफल तो दे सके।
परम धाम तो नहीं वह दे, स्वर्ग लोक तो दे सके।।११।।

ब्राह्मण गोत्र की बात नहीं, ब्रह्म जिज्ञासु को रे कहें।
यह कहीं भी नहीं कहें, गोत्र रहित वंचित रहें।।१२।।

मनोलोक में जन्म जो ले, आन्तर लोक में आ जाये।
ब्राह्मण वह ही होता है, जो साधक लोक में आ जाये।।१३।।

तनो लोक जो छोड़ दे, परम अनुयायी वह हो जाये।
राम मिलन जिज्ञासु जो, नाम में पूर्ण खो जाये।।१४।।

हो एक चाह एक लग्न, विवेक भरा रे मन भये।
बस परम को मिलना है, नित्य निरन्तर यह ही कहे।।१५।।

कर्म व्यवस्था कुल नहीं, मन सों कुल रे जान ले।
बाह्य वर्ण की बात नहीं, आन्तर वर्ण रे जान ले।।१६।।

वेदज्ञ बनी न पायें, गुरु कृपा ही चाहिये।
गुरु कृपा रे पा करी, आत्म कृपा तुम पाइये।।१७।।

शास्त्र कृपा सों जग त्याग नहीं, स्वतः ही छूट गया।
अनिश्चित क्षणिक जान गया, और रे नाता टूट गया।।१८।।

ब्राह्मण तन की बात नहीं, तन त्यजे ब्राह्मण हो जाये।
तनो भाव जो छोड़ दे, वह ही ब्राह्मण हो जाये।।१९।।

जिज्ञासा परम की हो, परम भाव में खो जाये।
पिपासा एको राम की हो, ब्राह्मण वह ही हो जाये।।२०।।

यज्ञ याग और कर्म विधि, वेदन् में दर्शायी जो।
अनुष्ठान रे वही करे, कर्मफल अनुयायी जो।।२१।।

तन निज को रे माने जो, अनुकूल व्यवस्था चाहते हैं।
शुभ अशुभ कर्म करी, प्रतिरूप फल ही पाते हैं।।२२।।

ब्रह्म लोक गर पा लिया, सत्त्व तत्व वंचित रहे।
गहन गति कहें कर्मन् की, सत्त्व सों वंचित रहे।।२३।।

क्या पाया गर सब पा कर, बाह्य कर्म सों नहीं मिले।
जिसको अपने कर्म कहे, उन कर्मन् सों नहीं मिले।।२४।।

कर्तृत्व भाव जब लग रहे, बाह्य स्थिति को ही चाहे।
परम सत्त्व रे ना प्रकटे, बाह्य स्थिति को ही चाहे।।२५।।

जो जग भी तू पा जाये, समुद्र में लहर ही है।
पानी में बुलबुला कहें, भाव का रूप ही तो है।।२६।।

मृगतृष्णा इसको कहें, स्वप्न लोक ही तो है।
क्षणिक क्षणभंगुर कह ले, मिथ्यात्व में मिथ्या तो है।।२७।।

कारण सों यह उभरे है, कारण गया तो जग गया।
कारण कार्य समुदाय, पूर्ण ही यह जग गया।।२८।।

पूर्ण रूपेण क्षणभंगुर, जग जाने वैराग्य भये।
तन स्वरूप जो जान ले, पूर्ण ही उपराम भये।।२९।।

ज्ञातव्य शास्त्र रे जान करी, गुरु चरण में जा बैठे।
समिधा कर में ले करी, राम शरण में आ बैठे।।३०।।

स्थित गुरु सर्ववित्त, सर्वज्ञाता के चरण गहे।
परम पद तो ही पा सके, स्थितप्रज्ञ की शरण गहे।।३१।।

राम कहो इस पल मुझको, क्योंकर क्या रे करना है।
तेरे जग में वैरागी हो, किस विध अब विचरना है।।३२।।

मैं समझी थी अब लग राम, मनो मौन ही पाना है।
मन में भाव नहीं उठे, समझ ले ठिकाना है।।३३।।

अब आगे बढ़ना होगा, कहो कहो मैं क्या करूँ।
मैं मेरी अब अपनी नहीं, कौन कहे मैं क्या करूँ।।३४।।

व्यथित हृदय पुकारे तुझे, तव चरणा ही निहारे है।
तड़प तड़प के देख पुनः, तुझको ही पुकारे है।।३५।।

राम राम अब राम राम, बस राम राम ही कहा करूँ।
इक वर दे बस यह वर दे, मैं नाम मग्न ही रहा करूँ।।३६।।

जग उत्पत्ति जान रे ली, स्वप्न ही रे होती है।
काज कर्म रे इस जग की, स्वप्न में ही होती है।।३७।।

जिसे जग जागृति राम कहें, वह सुषुप्ति होती है।
जिसे सुषुप्ति जग कहे, जागृति वह होती है।।३८।।

मौन ही है परम वचन तेरा, बाह्य शब्द यह मौन है।
मौन ही परम है कर्म तेरा, बाह्य कर्म जड़ मौन है।।३९।।

जिसे कहें बहु शब्द कहें, जड़ शब्द सब होते हैं।
जिसे कहें बहु भाव बहें, जड़ प्रवाह वह होते हैं।।४०।।

मौन ही भाषा तेरी है, अब तेरी भाषा जान लूँ।
परम मौन रे तू ही है, तुमको ही अब जान लूँ।।४१।।

जड़ कर्मन् में रति रे मन, जड़ जग रति रे क्या जाने।
महा मौन है परम गति, अविद्या रति रे क्या जाने।।४२।।

पुनः कहूँ मन समझ ले, बाह्य कर्म सब तम में है।
मूर्ख जीव रे वह ही है, कर्मन् के जो दम्भ में है।।४३।।

बाह्य कर्म ना अपनाना, वह कर्म तेरा नहीं।
बाह्य जग ना अपनाना, जग धर्म वह तेरा नहीं।।४४।।

जड़ कर्म सब मौन हैं, जड़ स्वप्न है जान ले।
तम पूर्ण हैं स्थूल तन, विश्व को भी जान ले।।४५।।

विराट रूप यह जग सारा, तम में ही तो होता है।
बाह्य प्रज्ञ रे हो कर के, नाहक पल तू खोता है।।४६।।

स्थूल लोक यह बाह्य लोक, मन मेरे सब जड़ ही है।
सत्त्व लोक महा मौन है, रजो गुणी साधक तू है।।४७।।

साधना रजोगुण में हो, रजो गुणी मन करता है।
मूर्ख मन तो वह ही है, जो तम में चित्त रे धरता है।।४८।।

जग का कारण जान ले, संस्कार ही होते हैं।
अन्तःकरण पूर्व कर्म, झंकार ही होते हैं।।४९।।

मिथ्या लग्न अब छोड़ दे, बाह्य रूप सब छोड़ दे।
मन रे तुमको कहते हैं, बाह्यप्रज्ञता छोड़ दे।।५०।।

कर्म त्याग की बात नहीं, स्वभाव कर्ता ही रहे।
जड़ कर्म रेखा बंधा, तन रे करता ही रहे।।५१।।

मन की बात कहते हैं, मनो प्रवाह तू छोड़ दे।
आन्तर लोक की कहते हैं, मनो व्यावहारिकता छोड़ दे।।५२।।

कर्तृत्व भाव तू छोड़ दे, संग चाह तू छोड़ दे।
अहंता तू छोड़ दे, तनत्व भाव तू छोड़ दे।।५३।।

स्थूल रूप जो देखे है, जिसमें चित्त लगाये है।
महाभूत का वृक्ष बना, कर्मन् के फल खाये है।।५४।।

भाव प्रवाह तू छोड़ दे, इन्द्रिय लोक यह छोड़ दे।
पूर्व कर्म सों नेह चित्त जो, स्वप्न दृश्य संग छोड़ दे।।५५।।

हृदय लोक में आ जाओ, समाधिस्थ हो जाना हो।
कारण तन में आये करी, प्रज्ञा लोक में आना हो।।५६।।

मन ही अब वह हो जाये, महाभाषा यह मौन है।
साधक तू अब जान ले, तेरी आशा इक मौन है।।५७।।

है जग यह मौन भाव मौन, विराट रूप यह मौन है।
है जड़ कर्म जड़ जग धर्म, वृक्ष फल यह मौन है।।५८।।

शब्द जो लब तेरा कहे, मूर्ख यह तो मौन है।
शास्त्र रचना जो रे होये, यह भी जड़वत् मौन है।।५९।।

महाभाव वह परम मौन, परम तत्व वह मौन है।
ज्ञान स्वरूप परम चेतन, प्रकाश रूप वह मौन है।।६०।।

वहाँ मन नहीं बुद्धि नहीं, बस रे एको मौन है।
अद्वैत अखण्ड सत्त्व तत्व, जान ले मन बस मौन है।।६१।।

राम मौन इक नाम मौन, बस रे वहाँ इक मौन है।
बाह्य मौन की बात नहीं, मन मिटाव ही मौन है।।६२।।

परम राह रे यह ही है, जग कहें जिसे मौन है।
चाह नहीं अरे संग नहीं, अहम् मिटाव ही मौन है।।६३।।

गुरु चरण में जाये करी, महा मौन तू पा ही ले।
अहम् संग रे महा लग्न, पूर्ण अब मिटा ही ले।।६४।।

साधना अन्त रे यह ही है, वेदान्त रे ये ही है।
परम ज्ञान मन यह ही है, महा शान्त मन यह ही है।।६५।।

९-९-६१

Form IV (See Rule 8)

1. Place of Publication: Arpana Trust, Madhuban, Karnal 132037, Haryana.
2. Periodicity of Publication: Quarterly
3. Printer's name: Mr. Ajay Mittal Nationality: Indian
   Address: Sona Printers Pvt. Ltd., F-86/1 Okhla Industrial Area, Phase I, New Delhi 110020
4. Publisher's name: Mr. Harishwar Dayal Nationality: Indian
   Address: Arpana Trust, Madhuban, Karnal 132037, Haryana.
5. Editor's name: Ms. Poonam Malik Nationality: Indian
   Address: Arpana Trust, Madhuban, Karnal 132037, Haryana.
6. Names and addresses of individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than one percent of the total capital: Arpana Trust.

I, Harishwar Dayal, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Harishwar Dayal
Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana

एक पत्र..

यह लेख 'अर्पणा पुष्पांजलि' के जून १९९३ अंक में से लिया गया है.

परम पावनी माँ!

कोटिशः प्रणाम!

गत दशक में जब जब भगवान जी ने मुझे अर्पणा की रत्नगर्भा धरती पर आने का सौभाग्य दिया, मुख्य द्वार से प्रवेश करते ही मुझे अपने हृदय में चैन, सन्तोष व आनन्द की अनुभूति प्राप्त होने लगती..

जब मैं मन्दिर में भगवान जी की दिव्य प्रतिमाओं के समक्ष नमन करती तो ऐसा लगता कि यही हैं वो भगवान.. जिन्होंने जीवन से परास्त हुई मुझ अबला को अपना स्वरूप दिखाने के लिए यहाँ बुलाया है!

परन्तु माँ! जब मैं आप के दर्शन करती और आप के श्रीमुख से उपनिषदों व श्रीमद्भगवद्गीता पर आधारित गद्य व पद्य में आपका भाव-प्रवाह श्रवण करती, तो सहसा मेरा मन कह उठता, 'धरती पर स्वर्ग उतारने वाली अलौकिक शक्ति कहीं दूर नहीं है.. बल्कि आज उन्हें मैं प्रत्यक्ष अपने समक्ष देख रही हूँ!' हृदय में ऐसी ही छाप अंकित कर लगभग १२ वर्ष मैं यहाँ आती जाती रही। लेकिन इन भावों की पुष्टि का जो अनुभव मुझे गत १५ मास में हुआ, उससे तो मेरा रोम रोम सिहर उठा है.. यही कारण है कि आज मैं अपने भाव आप तक पहुँचाने का साहस बटोर रही हूँ।

श्रद्धेय माँ! आप क्या हैं और क्या नहीं हैं? आपके ज्योतिर्मय व्यक्तित्व के विषय में मुझ मूढ़ा का कुछ भी लिखना सूर्य के प्रकाश के समक्ष जुगनू के टिमटिमाने वाली बात होगी, पर अपने भाव आप तक पहुँचाने का माध्यम भी मुझे यही सूझा है..

आज के कलियुग में संतप्त, अतृप्त, बेचैन व अपनी ही अज्ञानता में भूले भटके राही को अपने मनोदर्शन, आत्म दर्शन व अध्यात्म पथ का दर्शन करने का जो अवसर अर्पणा में मिलता है, वह अनूठा है!

आप का समस्त जीवन ज्ञान, कर्म व भक्ति की पराकाष्ठा का एक ज्वलन्त प्रमाण है। प्रत्येक साधक को अपनी ही मनोवृत्तियों के स्पष्ट दर्शन, उचित अनुचित का ज्ञान, सत् व असत् की राह एवं नित्य अनित्य का भेद सहज स्वाभाविक रूप में आपसे पता लग रहा है। ऐसा लगता है कि आपका हर व्यवहार 'खेल खेल में' ही अध्यात्म के गुह्य विषय को सुलभ बना रहा है।

अहर्निश 'मैं' 'मैं' की तूती बजाने वाले हम लोगों को, शास्त्र ज्ञान राही मिथ्यात्व से निकाल कर आप हमें अपने तन मन से ऊपर उठने की प्रेरणा देकर निष्काम कर्म व सच्ची सेवा का सुन्दर अभ्यास करवा रही हैं।

परम मौन में स्थित आपका जीवन.. हमें देहात्म बुद्धि से निकाल मौन में ही मौन का अभ्यास करने की प्रेरणा देता है। आपने अपने साधकों को अपनी आवश्यकता पूर्ति हेतु जिह्वा पर शब्द लाने का कभी अवसर ही नहीं दिया, बल्कि उन्हें बिन माँगे ही उनके आन्तर्मन में निहित भावानुकूल सब प्रदान करती हैं.. कई बार तो आपकी शरण में आने वाला मौन में ही आपकी अनुकम्पा प्राप्त कर आश्चर्यचकित हो उठता है।

अर्पणा में साधकगण की कर्म प्रणाली, उनका विकसित व्यक्तित्व, अटूट प्रेम, सेवा, त्याग व निष्काम भाव आश्रम की विभिन्न गतिविधियों का जो मुखरित रूप प्रस्तुत कर

रहा है, उसकी शत प्रतिशत प्रेरणा शक्ति माँ, केवल आप हैं। निराशा में डूबे हुए और उलझन पूर्ण जीवन की गुत्थियों से जकड़े हुए व्यक्तियों को न केवल आपने शरण ही दी.. बल्कि उन्हें एक नयी ज़िन्दगी जीने की प्रेरणा देकर उनके होंठों पर मुसकान के मोती भी आपने ही बिखेरे हैं!

जीवन से पलायन किये हुए व्यक्तियों के मन में आशा का संचार करके आपने ही उन्हें मानसिक तथा आत्मिक सुख पहुँचाया है। जब मैं यहाँ के साधकों की कर्मनिष्ठा, लग्न, असीम श्रद्धा तथा उनके त्याग और तपमय जीवन पर दृष्टिपात करती हूँ तो ऐसा लगता है कि उनके हर कर्म के पीछे आपकी प्रेरणा ही उनको भक्ति व शक्ति प्रदान किये हुए है! वे बोलते हैं तो मानो आप ही उनके आन्तर्मन में बैठ उनके होंठों से बोल रही हैं.. वे चलते हैं तो यूँ आभास होता है मानो आप ही की अदृश्य शक्ति ने उनके पाँवों में शक्ति भर दी है..

यहाँ का स्वर्गिक, सौन्दर्यमय वातावरण.. नियमित दिनचर्या, शास्त्र श्रवण, मनन व चिन्तन का अभ्यास.. संगठित और स्नेहिल व्यवहार.. जिसने शिशु से लेकर प्रौढ़ को, निर्धन से लेकर अमीर को सुन्दर माला के रूप में एक ही सूत्र में पिरो रखा है, वह अद्‌भुत शक्ति माँ आप ही हैं!

तुलसीदास जी ने श्रीराम चरित् मानस में कहा है -

"बिन सत्संग विवेक न होई, राम कृपा बिन सुलभ न सोई।
सत्संगति मुद मंगल मूला, सोई फल सिद्धि सब साधक फूला।।"

इन पंक्तियों की यथार्थता आपकी उपासना में बैठे साधकों के जीवन का निजी अनुभव ही है। विचार गोष्ठी रूप में प्राप्त आपके प्रवचनों ने कईयों के जीवन में ख़ुशियाँ भर दी हैं।

श्रद्धेय माँ!

वेदों में प्रवाहित 'ॐ' के चारों पादों की विशुद्ध व्याख्या आपके मुखारविन्द से जिस सरल भाषा में हम सुनते हैं.. उससे अध्यात्म को समझना मुझ जैसे मूर्ख के लिए भी आसान हो गया है।

ओम् के प्रथम पाद में वर्णित 'वैश्वानर की पूजा' का सतत् अभ्यास अर्पणा अस्पताल में साधक भाव से युक्त डॉक्टरों व नर्सों की दिनचर्या में हमें रात दिन देखने को मिलता है। स्वच्छ, शान्त व पवित्र वातावरण में रहकर रोगी जब यहाँ से जाते हैं तो मैंने उनके चेहरों पर सन्तोष भाव व मुसकान अक्सर देखे हैं और कईयों को तो यह कहते भी सुना है कि -

"बीबी यह अस्पताल तो सही रूप में एक मन्दिर है.. जहाँ पर सब राम राम कहते हुए मीठी वाणी से बोलते हैं।"

परम पूज्य माँ, श्रीमती शान्ता एवं परिवार के अन्य सदस्य

ज्योतिर्पुंज माँ!

आपके चमत्कारिक व्यक्तित्व को देख कर ऐसा आभास होता है कि साक्षात् लक्ष्मी, सरस्वती व गंगा आपके रूप में धरती पर उतर आई हैं। दैवी सम्पदा से विभूषित, भारतीय संस्कृति व सभ्यता की पोषक, मानवता की सजीव प्रतिमा आप मेरे लिए केवल गुरु ही नहीं, भागवत् रूप हैं। आपसे ही जीवन में पग पग पर जीने की विधि सीखने का अभ्यास कर रहे हैं हम!

भगवान के प्रति अर्पण का एक विलक्षण दृष्टिकोण मैंने जीवन के दीर्घकाल में प्रथम बार यहाँ पर आकर ही देखा है। स्थूल वस्तुओं को भगवान के चरणों में अर्पित करना ही पूजा नहीं है.. बल्कि जीव को अपनी 'मैं', ममत्व भाव तथा अहंकार को प्रभु चरणों में समर्पित करने का सही दृष्टिकोण.. हमें आपका हर कर्म और हर वाक् दे रहा है।

आश्रम की हर गतिविधि को कर्त्ता के कर्तृत्व भाव से व गुमान से मुक्त रखने की प्रेरणादायिनी माँ केवल आप हैं। आपके दिव्य-दर्शन से मुझे भगवान की इस कथनी का अर्थ अब कुछ कुछ समझ आने लगा है -

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेन माश्चर्यवद्वदतितथैव चान्यः।
आश्चर्यवच्चैनमन्यः श्रृणोति श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित्।। (२/२९)

अर्थात् कोई महापुरुष ही इस आत्मा को आश्चर्य की भांति देखता.. और वैसे ही दूसरा कोई महापुरुष इसके तत्त्व का आश्चर्य की भाँति वर्णन करता है तथा दूसरा (कोई भी) इस आत्मा को आश्चर्य की भाँति सुनता है और कोई सुनकर भी इस आत्मा को नहीं जानता।

आश्चर्यचकित,

शान्ता

राम नाम का मूल मन्त्र

डॉ. जे के महता (पापा जी) द्वारा प्रस्तुत यह लेख,
'अर्पणा पुष्पांजलि' के अगस्त १९९० अंक में से लिया गया है.

मैं तो राम नाम के जपन को केवल लब से जाप अथवा मन में राम नाम के उच्चाचरण को ही नाम समझता था.. और प्रायः इसी का अभ्यास करता था। दीन दुःखियों, दरिद्रों की सेवा भी किया करता था और बस इसको ही राम नाम समझता था। परन्तु निरन्तर इस प्रकार से जीवन प्रवाह के बहते हुए भी मन में चैन नहीं था।

लोगों के दोष-दर्शन मन में द्वन्द्व पैदा करते थे.. जो शुभ कर्मों से मिले बाह्य सुख को भंजित कर देते थे। मन में राग-द्वेष, ईर्ष्या तो ज्यों के त्यों ही बने रहे। अपनी इस आन्तरिक अशान्ति को दूर करने के लिए कभी श्रीमद्भगवद्गीता की शरण में जाता.. कभी भगवान से प्रार्थना करता.. कभी राम नाम का जपन ज़ोर से आरम्भ कर देता..

परिणामस्वरूप यह सोचता कि दूसरा ग़लत है जिसने मुझे दुःखी किया, मैं तो ठीक ही हूँ। इस निष्कर्ष पर पहुँच कर मुझे कुछ पल के लिए चैन चाहे मिल जाती, पर आन्तर के द्वन्द्व तो दूर न हो पाते.. वहाँ पर भरा द्वेष, दोष-दृष्टि तो ज्यों की त्यों ही बनी रहती।

करुणामयी भगवान की करुणा तो देखो.. इक दिन ऐसे गुरु मिले, जिन्होंने मुझे अपना लिया! जग में मेरे बिगड़े काम सुधारने लगे.. दुःख, सुख में बदल गये। जिस

श्रीमद्भगवद्गीता का अध्ययन मैं आजीवन करता आया था और समझता था कि मुझे गीता का ज्ञान हो गया.. परम पूज्य माँ को मैंने उस गीता की सजीव, सप्राण प्रतिमा पाया!

बरसों के इस निरन्तर अनुभव के पश्चात् मैंने एक दिन चरण में सीस झुका दिया और पूछ ही लिया, "यह सब आप कैसे कर पा रहे हो? हमारे ही स्तर पर आकर, आप हमारी सेवा कैसे कर सकते हो?" तो सहज में ही वह कह उठे:

"आप को भेजा राम ने, मुझे राम ही मिल गया।"

यही वह मूल-मन्त्र है जो करुणापूर्ण राम ने पूज्य माँ के जीवन राही मुझे प्रदान किया।

शनैः-शनैः दीखने लगा कि पूज्य माँ के जीवन के प्रवाह से मेरा जीवन प्रवाह तो बिलकुल ही विपरीत था। प्रत्यक्ष ही आंतर में दीखने लगा कि मैं अपने आन्तर-द्वन्द्व का कारण स्वयं आप हूँ, अपनी अशान्ति का कारण भी मैं आप हूँ।

यह तनत्व भाव, यह तनो संग, यही तो मैं हूँ! इस 'मैं' ने तो जीवन भर के निष्काम कर्मों को राम चरण में चढ़ाने की बजाय अपने चरण में अर्पित किया.. पूर्ण ज्ञान और भक्ति को अपने इस एक शरीर की श्रेष्ठता सिद्ध करने में लगा दिया..

जीवन के इस अन्तिम पड़ाव में, शरीर के छूटने से पहले, हे राम मेरे! यह तेरी कैसी अपार करुणा हुई.. तेरे संसार में सद्गुरु और अन्य संत गणों की अपार कृपा से मैं निज को देख सका और जान सका कि 'मैं' ही वह आवरण हूँ जो राम को ढक रहा हूँ, 'मैं' ही वह पाप का पुंज हूँ जो पावनता पर कलंक लगा है।

यह मैं चाहे जो भी हूँ, पर इस में कोई संशय नहीं रहा कि यह जग सारा राम रूप ही है, और राम की करुणा ही है, जो आज मैं ऐसा देख सकता हूँ।

'नाम ही पावनी है' सब संतन ने यही कहा। जीवन तो अब आरम्भ होना है इसी राम रूप जगत में..

इसी के द्वारा अपनी आन्तरिक अपावनता का दर्शन पा कर अब इसी जग की सेवा चाकरी में इस जीवन का शेष भाग और आने वाले बाक़ी जन्म बिताने है.. इस आशा में कि इक दिन वह करुणापूर्ण राम अपनी चरण अनुरक्ति का बीज इस चित्त में डाल देंगे!

देहात्म बुद्धि युक्त जीव
भगवान की बातें क्या समझेगा?

अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम्।
तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि।।

श्रीमद्भगवद्गीता २/२६

भगवान ने देखा जब - अर्जुन तत्व ज्ञान की दृष्टि से आत्मा को नहीं समझा, तब वह उसे दूसरे दृष्टिकोण से समझाने लगे और कहने लगे :

शब्दार्थ :

१. और यदि तू इसको, (आत्मा को),
२. सदा जन्मने और सदा मरने वाला माने,
३. तो भी हे अर्जुन! तुझे ऐसा शोक करना उचित नहीं।

तत्व विस्तार :

नन्हीं लाडली! जब भगवान देखते हैं कि दूसरा उनकी बात नहीं समझ रहा तब वह परम गुरु शिष्य के बुद्धि स्तर पर आकर उसे समझाते हैं।

१. अर्जुन न तो आत्म तत्व की बात समझ सका और न ही जान सका।

२. अर्जुन में इतनी श्रद्धा ही नहीं थी कि 'भगवान ने कहा है', यह जान कर भगवान की बात मान ले।

३. शब्द ज्ञान तो थोड़ा समझ भी गया होगा, किन्तु जीवन में उसे ले आना अतीव कठिन है।

असल बात यह है नन्हीं! बुद्धि का गुमान रखने वाले लोग समझते हैं कि उनकी बुद्धि सब कुछ समझ सकती है। वे उस बात को मानते हैं जो उनकी बुद्धि में आ जाये, यानि :

क) जो वे समझ सकते हैं,

ख) जो उनके चिन्तन में आ जाये,

ग) जो वे प्रत्यक्ष सामने देख लें,

घ) जो शब्द बधित हो सके,

फिर उसे शायद मान भी लें।

किन्तु :

१. जिस अचिन्त्य तत्व का चिन्तन भी न कर सकें, उसे कैसे मान लें?

२. जिस अग्राह्य तत्व को ग्रहण ही न कर सकें, उसे कैसे मान लें?

३. जो नित्य अव्यक्त तत्व है, जिसका निश्चित रूप से निश्चय न किया जा सके, उसको कैसे जान लें?

४. जो अप्रमेय तत्व है, उसे कैसे मान लें?

५. जीव की सीमित बुद्धि असीम को कैसे जान सकती है?

फिर, जो बात या तत्व तुम अपने जीवन में न लाना चाहो, उसे समझना अतीव कठिन है।

क) ज्ञान, जो आप ही के जीवन में सिद्ध न हो, वह अज्ञान समान ही होता है।

ख) जिस ज्ञान का प्रयोग आप अपने जीवन में नहीं करते, वह ज्ञान शब्द ज्ञान ही रह जाता है।

ग) जिस ज्ञान को आप अपने जीवन में नहीं लाते, वह ज्ञान निष्प्राण तथा निस्तेज रह जाता है।

घ) यदि आप स्वयं ज्ञान की प्रतिमा बन जायें तो वह ज्ञान सतेज तथा सप्राण हो जाता है।

आत्म तत्व को समझने के लिये आत्मवान बनना ज़रूरी है। आत्म तत्व समझ में आने की बात नहीं, आत्म तत्व में समाहित हुआ जा सकता है, यानि तनत्व भाव, कर्तृत्व भाव तथा भोक्तृत्व भाव त्याग किया जा सकता है। तत्पश्चात् की स्थिति का बयान नहीं किया जा सकता।

अर्जुन को भी यही मुश्किल पड़ी। वह आत्म तत्व को न समझ सका। इस कारण भगवान उसके दृष्टिकोण से कहने लगे कि अर्जुन! यदि तू मानता है कि आत्मा का नित्य जन्म होता है और आत्मा नित्य मरता है, तब भी तुम्हारे लिये शोक करना उचित नहीं क्योंकि :

क) जन्म तो निश्चित होगा।

ख) मृत्यु तो निश्चित आयेगी।

जब मरना ही है तो शोक कैसा? जो तेरा कर्तव्य है, वह करता जा।

साधक! तू भी बुद्धि गुमान छोड़ दे और भगवान की कथनी मान ले। बुद्धि माने या न माने, इसकी परवाह न कर। साक्षात् भगवान कथन तू मान ले, भगवान तो सच ही कहते हैं। वह कहते हैं तू मन नहीं, तू बुद्धि नहीं है। देख तो ले!

१. साक्षात् परम पुरुष पुरुषोत्तम, भगवान स्वयं कह रहे हैं।

२. नित्य भगवद् तत्व, विज्ञान स्वरूप स्वयं कह रहे हैं।

३. नित्य प्रकाश, आत्म स्वरूप स्वयं कह रहे हैं।

४. नित्य अध्यात्म प्रकाश स्वरूप भगवान कृष्ण स्वयं कह रहे हैं।

५. नित्य अविनाशी, ज्ञान स्वरूप स्वयं कह रहे हैं।

६. विशुद्ध परमात्मा, आनन्द स्वरूप भगवान स्वयं कह रहे हैं।

७. परम ब्रह्म, अखण्ड तत्व, सत्त्व स्वरूप स्वयं कह रहे हैं।

८. निराकार, साकार रूप धर कर कह रहे हैं।

गर इनकी बात भी तू नहीं मानेगा तो फिर किसकी बात मान पायेगा? कृष्ण जैसा समझाने, पुनः कौन आयेगा? इसलिये :

क) जो वह कहते हैं, मान ले।

ख) इस तन से नाता तोड़ दे।

ग) कुछ पल के लिये ही सही, जो वह कह रहे हैं, वही कर।

घ) आत्मा से नाता जोड़ ले और अपने

आपको तन समझना बन्द कर दे।

भगवान को क्यों कहना पड़ा, 'यदि तू मेरा कथन नहीं मानता, तो तुझे तुम्हारे ही दृष्टिकोण से समझाता हूँ?'

तुम भी भगवान को क्यों झुकाना चाहते हो? भगवान की बात को अक्षरशः सत् मान कर उसे जीवन में लाने के यत्न क्यों नहीं करते? इतना ही मान ले कि भगवान सत्य कहते हैं; भगवान ग़लत नहीं हो सकते; आपकी समझ में कमी हो सकती है, किन्तु भगवान की कथनी में कमी नहीं हो सकती। फिर समझ की कमी के भी तो अनेकों कारण हो सकते हैं जैसे :

क) तनत्व भाव छोड़ते हुए डर लगता है।

ख) अपनापन छोड़ते हुए डर लगता है।

ग) अपनी मान्यताओं को छोड़ते हुए भी जीव को डर लगता है।

'भाई! अपने आपको ही भूल जायें, तो फिर हमारा क्या होगा?' ऐसे विचार मन में उठ आते हैं। इन्हीं कारणों से देहात्म बुद्धि युक्त जीव भगवान की बातें नहीं समझ सकता।

किन्तु नन्हीं! भगवान ने कहा है! जिन्हें आप भगवान मानते हो, उन्होंने कहा है! ज़रा सी हिम्मत की बात है, कोशिश करके तो देखो, शायद काम बन ही जाये।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।।

श्रीमद्भगवद्गीता २/२७

अर्जुन के शोक निवारण अर्थ भगवान फिर से कहते हैं :

शब्दार्थ :

१. क्योंकि जन्मे हुए की तो मृत्यु निश्चित है
२. और मरे हुए का जन्म निश्चित है,
३. इसलिये इस अटल बात में तुझे शोक करना उचित नहीं।

तत्व विस्तार :

भगवान कहते हैं, अर्जुन!

१. जो अवश्यम्भावी है, उसके लिये शोक करना उचित नहीं।

२. जिसका इलाज कोई नहीं, उसके लिये शोक करना उचित नहीं।

३. जिसको बदल न सको, उसके लिये शोक करना उचित नहीं।

४. जिसको पराजित न कर सको, उसके लिये शोक करना उचित नहीं। यानि जो होना ही है, उससे क्या डरना?

५. जो होना ही है, उससे क्यों भिड़ते हो?

६. जो होना ही है, उसके कारण क्यों शोक युक्त हो गये हो?

नन्हीं! तू भी समझ ले। मृत्यु तो आयेगी ही, उससे डरना मूर्खता है। तन माटी बन ही जायेगा, इसलिये मृत्यु का शोक व्यर्थ है।

इस कारण अपना धर्म, अपना कर्तव्य और अपनी सत्यता न छोड़ देना। और क्यों न कहूँ, जब मृत्यु होनी ही है, तो इस जीवन में भगवान की बात ही मान ले। जो भी वह कहते हैं, उसे उनका आदेश जान कर अपने जीवन में ले आओ।

भाई! जब जन्म के बाद मृत्यु निश्चित है और मृत्यु के बाद पुनः जन्म निश्चित है, तो एक जीवन भगवान को भी दे दिया तो क्या हुआ? कुछ तो बीत ही चुका है, जो बाक़ी रह गया है, उतना ही उन्हें दे दो। वास्तव में तुम्हारा फ़ायदा भी इसी में है, तुम्हारा सुख भी इसी में है और नित्य आनन्द भी इसी में है।

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना।।

श्रीमद्भगवद्गीता २/२८

पुनः भगवान अर्जुन के दृष्टिकोण से कहते हैं कि यदि तू मानता है कि देही जन्मता और मरता है, तब भी यूँ समझ ले!

शब्दार्थ :

१. हे अर्जुन!
२. सब भूत अव्यक्त आदि वाले हैं,
३. सब भूत अव्यक्त अन्त वाले हैं,
४. केवल मध्य में ही व्यक्त होते हैं,
५. फिर इस विषय में विलाप कैसा?

तत्व विस्तार :

क) जन्म से पहले आप क्या थे, कौन थे, यह आप क्या जानें?

ख) जन्म से पहले आप जो भी थे, वह आप जान भी नहीं सकते।

ग) जन्म से पहले आप जो भी थे, वह आप से ही छिपा हुआ है।

घ) जन्म से पहले आप जो भी थे, वह आपके लिये अचिन्त्य तथा अज्ञेय है।

ङ) फिर मृत्यु के पश्चात् क्या होगा, वह भी तो आप नहीं जान सकते।

च) मृत्यु के पश्चात् जो होगा, वह भी तो आप से अव्यक्त ही होगा।

केवल थोड़े समय के लिये, जब आप तन धारण किये हुए हो, तब ही तो :

१. सब कुछ देख सकते हो।

२. सब कुछ जान सकते हो।

३. सब कुछ मान सकते हो और कह सकते हो।

४. सब कुछ समझ सकते हो।

५. सब कुछ, इन्द्रिय राही प्रत्यक्ष सामने पाते हुए अनुभव कर सकते हो।

६. विभिन्न विषयों का चिन्तन और मनन कर सकते हो।

किन्तु जब न आगे की जानते हो, न पीछे की जानते हो और यह भी जानते हो कि इस तन की मृत्यु निश्चित ही है, तब किसी भी बात का शोक करना मूर्खता है।

परिदेवना का अर्थ है :

विलाप करना, रुदन करना, पीड़ित होना, क्षोभ करना, शोक करना, चिन्ता करना।

नन्हीं! यह सब सुन कर तू अपने लिये यूँ समझ कि :

क) तन तो मृत्यु पायेगा ही, इसको मृत्यु की ओर बढ़ते देख कर,

१. मन को कभी दुःखी मत करना।

२. मन में व्याकुलता न ले आना।

३. मन में शोक तथा क्षोभ न भर लेना।

४. मन को नाहक विक्षिप्त न कर लेना।

ख) तन तो मृत्युधर्मा है, मर ही जायेगा। इसलिये :

१. इस बेवफ़ा तन से बहुत वफ़ा करनी अच्छी नहीं।

२. जितनी घड़ियाँ इस तन ने तुम्हारा साथ दिया, उतनी ही बड़ी बात है।

३. जीवन का भी लोभ न कर, कौन जाने कौन सी घड़ी अन्तिम होगी। जिस तन का तू भूत और आगामी नहीं जानती, उसकी चिन्ता करना मूर्खता है।

४. फिर, तन तो तुम्हारे अधीन है, तुम इसकी नौकरी क्यों करती हो?

५. जब तक तन है, इस राही जीवन में कोई श्रेष्ठ कर्म कर।

तुम्हारा कर्तव्य अपने आपको जानना है, अपने स्वरूप में स्थित होने के साधन करना है।

श्रेष्ठ बनना ही तुम्हारा कर्तव्य है और श्रेष्ठ गुणों को अपने जीवन में लाना ही तुम्हारा धर्म है। सो मेरी नन्हीं जान्! तू भी यही कर।

❖ ❖ ❖

परम पूज्य माँ

अर्पणा
समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
मार्च २०२०

अर्पणा आश्रम के आयोजन

'उर्वशी संध्या' - भक्तिमय संगीत के लम्हे

परम पूज्य माँ का भक्तिमय स्वतः स्फुरित प्रवाह, जिसे वह अपने 'भगवान के लिए प्रेम पत्र' कहा करते थे.. में से निसृत भजन अति मनमोहक हैं, जो साधकों, मित्रों एवं संगीत चाहुकों को सदैव अपनी ओर आकर्षित करते हैं। २६ दिसम्बर, २५ जनवरी एवं ८ फरवरी को करनाल में एकत्रित जन ज्ञान एवं भक्तिरस से ओत-प्रोत उन कविताओं के श्रवण एवं उनके गायन से मन्त्र-मुग्ध हो उठे!

'उर्वशी संध्या' के लिए ज्योत का प्रज्ज्वलन

चण्डीगढ़ पुस्तक मेले में 'अर्पणा'

१-९ फरवरी तक आयोजित चण्डीगढ़ पुस्तक मेले में 'अर्पणा' ने भी भाग लिया। यहाँ पर हिन्दी और अंग्रेज़ी भाषाओं में 'उर्वशी'.. परम पूज्य माँ द्वारा की गई शास्त्रों की विस्तारपूर्वक व्याख्या, जहाँ उन्होंने शाश्वत मूल्यों.. प्रेम, क्षमा, ईमानदारी, करुणा, विनम्रता, उदारता इत्यादि का स्पष्टीकरण किया है, ..जो अनन्तकाल से सभी धर्मों के गठन के सार रहे हैं, के प्रकाशनों को प्रदर्शित किया गया। अर्पणा ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य प्रवचनों, मीडिया के माध्यम से, प्रेरणादायक नाट्य मंचन इत्यादि द्वारा शाश्वत मूल्यों का प्रचार एवं प्रसार करना है।

अर्पणा परिवार, आश्रम में क्रिसमस मनाते हुए..

हरियाणा समाचार

अंतर्राष्ट्रीय विकलांगता दिवस

६५० निःशक्त जनों एवं उनके परिवारों से लगभग २०० सदस्यों ने २ जनवरी को गाँव बुड्ढाखेड़ा में अन्तर्राष्ट्रीय विकलांगता दिवस मनाया। वे ४६ डिफरेंटली एबल्ड पर्सन्ज़ ऑर्गेनाइज़ेशन (डीपीओ) के सदस्य हैं, जिन्हें अर्पणा द्वारा ४५ गाँवों में चलाया जा रहा है। मुख्य अतिथि, श्री दिनेश शास्त्री, जो हरियाणा के विकलांगता कमिश्नर हैं, ने अर्पणा के कार्यक्रमों की सराहना की जो निःशक्त जनों के लिए आय सृजन, सामाजिक समावेश एवं बच्चों की शिक्षा के साथ साथ उन्हें सरकारी लाभों के लिए भी मदद कर रहा है।

'उन्नति महिला महासंघ' की वार्षिक बैठक

२ दिसम्बर को बुड्ढाखेड़ा गाँव में स्वयं सहायता समूहों से 'उन्नति महिला महासंघ' की वार्षिक बैठक हुई जहाँ ३९८ समूहों ने भाग लिया। उनकी मुख्य कार्यसूची थी- स्वच्छ, स्वस्थ एवं प्लास्टिक मुक्त भारत! अर्पणा से प्रशिक्षकों ने स्वच्छ भारत की ओर सभी को प्रेरित करने के लिए एक लघु नाटक प्रस्तुत किया। महिलाओं ने बैंकों के साथ होने वाली अपनी समस्याओं को विस्तार से बताया, जिनका मुख्य अतिथि, नाबार्ड के श्री सुरेन्द्र सिंघल ने, समाधान करने का आश्वासन दिया।

श्री सिक्का ने काछवा गाँव में, पंजाब नेशनल बैंक द्वारा आयोजित, महिलाओं के घरेलू आय सृजन के लिए प्रशिक्षण के विषय में बतलाया।

सहारा

१९ वर्षिय सहारा, दोनों पैरों में अपंग हो गई जब बचपन में ही उसे पोलियो हुआ। वह अपने गाँव पीरबड़ोली में निःशक्त जन संगठन की सदस्य बन गई। अर्पणा द्वारा उसे २०१७ में एक हस्तचालित तिपहिया साइकिल दी गई जिससे वह चलनशील हो सके।

अर्पणा से समर्थन पा कर सहारा ने अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी की.. अब वह ९वीं कक्षा में पढ़ रही है। हाल ही में जब उसके पिता का देहान्त हुआ, तो सहारा ने पहली और दूसरी श्रेणी के ७-८ बच्चों को ट्यूशन देना आरम्भ कर दिया, जिससे वह घर के ख़र्चों में अपनी माँ की सहायता कर सके। अपनी विकलांगता को हराकर आगे बढ़ते रहने के उसके दृढ़ संकल्प को देखकर उसकी माँ बहुत ख़ुश होती है।

हम ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के अनुदान के लिए टाइड्ज़ फाउंडेशन एवं इन्टरनैशनल डिज़ास्टर एण्ड रिलीफ़ फण्ड (IDRF), **यूएसए, के अतीव आभारी हैं!**

अर्पणा अस्पताल

अर्पणा अस्पताल के लिए एंडोस्कोपी उपकरण!

डॉ. सिन्हा नये उपकरण के साथ

१६ फरवरी को, लम्बे समय से प्रतीक्षित एंडोस्कोपी उपकरण **टाइड्ज़ फाउंडेशन, यूएसए** द्वारा अर्पणा अस्पताल को दान में दिया गया। जिससे सभी डॉक्टर, तकनीशियन और कर्मचारी बहुत प्रसन्न हुए। बाहर से उपकरण लाने की प्रतीक्षा न करके अब अर्पणा ज़रूरत पड़ने पर मरीज़ों का परीक्षण करने में सक्षम हो सकेगा।

अर्पणा के डॉक्टरों द्वारा स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा

अर्पणा के डॉक्टर आलोक सिन्हा और डॉ. तनु गोयल ने जनवरी में ५ गाँवों में स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ाने के लिए शिविर आयोजित किये और ६६७ ग्रामीण लोगों से मोटापे और स्वास्थ्य पर उसके प्रभाव के विषय में बातचीत करने के साथ साथ सर्दियों में छोटे बच्चों में श्वसन की समस्याओं को रोकने के विषय में भी बताया।

अर्पणा अस्पताल एवं समुदायों के बीच सेतु

५ गाँवों में १९ स्वास्थ्य सखियों की टीम का गठन किया गया जो समुदायों एवं अर्पणा अस्पताल के बीच में एक सेतु का काम करेंगी जिससे वे रोगियों की सहायता करने के साथ साथ उनकी स्वास्थ्य समस्याओं का भी समाधान करेंगी।

हिमाचल प्रदेश की वादियाँ

किसानों के लिए एकदिवसीय प्रशिक्षण शिविर

६ जनवरी को, अर्पणा केंद्र गजनोई में आयोजित एक शिविर में २५ किसानों ने भाग लिया जिसमें चम्बा के सरू ज़िले के ऑर्गेनिक फार्मिंग प्रोग्राम की इंचार्ज, डॉ. रेणु कपूर ने, सरकारी जैविक खेती की परियोजानाओं के विषय में किसानों को समझाया। किसानों को प्रोत्साहन राशि दी जाती है जब वे कीटों और रोगों की रोकथाम के लिए जैविक तरीकों को उपयोग में लाने की प्रतिज्ञा करते हैं। अच्छी गुणवत्ता वाले १ किलोग्राम सरसों के बीज प्रत्येक किसान को वितरित किये गये, जिनसे उन्हें अधिक उपज प्राप्त हो सकेगी।

दिल्ली के कार्यक्रम

छात्रवृत्ति

१५ जनवरी को वसंत विहार, नई दिल्ली में अर्पणा के केन्द्र 'रिजॉयस' के एक समारोह 'ज्ञान आरम्भ छात्रवृत्ति' में शैक्षणिक दक्षता, व्यक्तिगत विषयों में उत्कृष्टता एवं उपस्थिति के लिए पुरस्कार दिये गये।

'ज्ञान आरम्भ छात्रवृत्ति' के कुछ गौरवान्वित प्राप्तकर्ता

गर्म ऊनी वस्त्रों का वितरण

६ जनवरी २०२० को गौतमपुरी से ज़रूरतमंद लोगों को गर्म ऊनी वस्त्र वितरित किये गये। इस उदार समर्थन के लिए हम श्री रविन्द्र बहल के आभारी हैं।

२ जनवरी को हमारे प्रायोजक अवीवा प्राइवेट लिमिटेड से प्राप्त उपहार के रूप में लाल रंग के ऊनी स्वेटर हमारी जूनियर बालवाटिका (नर्सरी कक्षा) के १४७ छात्रों को दिये गये.. जिससे उन नन्हें शिशुओं के चेहरों पर मुसकान आ गई।

अर्पणा अपने शैक्षिक कार्यक्रमों में सहायता करने के लिए अवीवा पीएलसी, यूके, एस्सेल फाउंडेशन, नई दिल्ली, टेक्निप इंडिया, केयरिंग हैंड फॉर चिल्ड्रन, यूएसए एवं अर्पणा कनाडा का अत्यन्त आभारी है।

We, at Arpana, depend on your support for our programs

Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust are both approved under Section 80G of the Income Tax Act, 1961, giving 50% tax relief for donors in India.
FCRA Registration No. for Arpana Trust is 172310001
FCRA Registration No. for Arpana Research & Charities Trust is 172310002
Send your contribution for dissemination of humane values & medical and community welfare services in Delhi to:

Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132037
Send your contributions for health & development services in Haryana & Himachal to:

Arpana Research & Charities Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132037
Send contributions in USA to:

Mr. Vinod Prakash, President, IDRF, 5821 Mossrock Drive, North Bethesda, MD 20852
Mr. Jagjit Singh, AID for Indian Development, 84 Stuart Court, Los Altos, CA 94022-2249
Send contributions to Arpana Canada:

c/o Mrs. Sue Bhanot, 7 Scarlett Drive, Brampton, Ontario L6Y 3S9, Canada
Please let us know by email or telephone, whenever you transfer funds to Arpana.
Information & Resources Office: 91-184-2390905 **Executive Director:** 91-9818600644
emails: **at@arpana.org and arct@arpana.org**

Contact person: Mrs. Aruna Dayal, Director Development. Mobile 91-9991687310
Websites: **www.arpana.org** **www.arpanaservices.org**